

ममता कालिया के कथा साहित्य में स्त्री-स्वातंत्र्य और पारिवारिक उत्तरदायित्व का द्वंद्व: एक अध्ययन

प्रीतिका

शोधार्थी, जयोति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर

सारांश

यह शोध-सार ममता कालिया के कथा साहित्य में स्त्री-स्वातंत्र्य और पारिवारिक उत्तरदायित्व के बीच उपस्थित द्वंद्व का विश्लेषण करता है। ममता कालिया की कहानियाँ और उपन्यास आधुनिक मध्यवर्गीय स्त्री के जीवन-संघर्ष, आत्मपहचान, आर्थिक आत्मनिर्भरता, भावनात्मक आकांक्षाओं तथा सामाजिक अपेक्षाओं को अत्यंत यथार्थपरक ढंग से प्रस्तुत करते हैं। उनकी स्त्री पात्रें स्वतंत्र जीवन, निर्णय-क्षमता और आत्मसम्मान की खोज करती हैं, किन्तु परिवार, विवाह, मातृत्व और सामाजिक मर्यादाओं से जुड़े उत्तरदायित्व उन्हें निरंतर चुनौती देते हैं। यह अध्ययन दर्शाता है कि लेखिका स्त्री को केवल पीड़िता के रूप में नहीं, बल्कि संघर्षशील, संवेदनशील और आत्मनिर्णयी व्यक्तित्व के रूप में चित्रित करती हैं। उनके कथा साहित्य में स्त्री-स्वातंत्र्य और पारिवारिक दायित्वों का यह अंतर्विरोध समकालीन भारतीय समाज में बदलते लैंगिक संबंधों, पारिवारिक संरचना और स्त्री चेतना के गहन सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भों को उजागर करता है।

मुख्य शब्द: ममता कालिया, कथा साहित्य, स्त्री-स्वातंत्र्य, पारिवारिक उत्तरदायित्व, स्त्री चेतना, मध्यवर्गीय समाज, लैंगिक संबंध, आत्मनिर्णय, सामाजिक अपेक्षाएँ।

1. प्रस्तावना

हिंदी कथा साहित्य भारतीय समाज की सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक तथा मनोवैज्ञानिक संरचनाओं का सशक्त दर्पण रहा है। समय के साथ समाज में होने वाले परिवर्तन साहित्य की विषयवस्तु, संवेदना तथा अभिव्यक्ति में भी परिलक्षित होते रहे हैं। विशेषतः स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारतीय समाज में शिक्षा, औद्योगिकीकरण, नगरीकरण, वैश्वीकरण तथा आर्थिक उदारीकरण के परिणामस्वरूप स्त्री की सामाजिक भूमिका, पारिवारिक स्थिति तथा वैयक्तिक चेतना में व्यापक परिवर्तन देखने को मिले। इन परिवर्तनों ने हिंदी कथा साहित्य को नई वैचारिक दिशाएँ प्रदान कीं, जिनमें स्त्री-विमर्श एक महत्वपूर्ण बौद्धिक एवं आलोचनात्मक प्रवृत्ति के रूप में उभरकर सामने आया।

समकालीन हिंदी कथा साहित्य में स्त्री अब केवल करुणा, त्याग अथवा आदर्शवाद की प्रतीक नहीं रह गई है, बल्कि वह एक स्वतंत्र, आत्मचेतस, निर्णयक्षम तथा सामाजिक रूप से सक्रिय व्यक्तित्व के रूप में स्थापित हुई है। स्त्री-स्वातंत्र्य की अवधारणा ने स्त्री की अस्मिता, आत्मनिर्णय, आर्थिक स्वावलंबन, लैंगिक समानता तथा मानवीय गरिमा जैसे प्रश्नों को साहित्यिक विमर्श के केंद्र में स्थापित किया। इसके समानांतर भारतीय परिवार, जो सामाजिक संरचना की आधारभूत इकाई माना जाता है, उसमें स्त्री की भूमिका परंपरागत उत्तरदायित्वों से गहराई से जुड़ी रही है। परिणामस्वरूप आधुनिक स्त्री के समक्ष व्यक्तिगत स्वतंत्रता और पारिवारिक दायित्वों के मध्य संतुलन स्थापित करने की चुनौती एक जटिल सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक यथार्थ के रूप में उपस्थित होती है।

इसी सामाजिक-सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में ममता कालिया का कथा साहित्य विशेष महत्व रखता है। उन्होंने मध्यवर्गीय जीवन, पारिवारिक संबंधों, स्त्री-अस्मिता, दाम्पत्य संबंधों, आर्थिक संघर्ष, सामाजिक अपेक्षाओं तथा बदलते जीवन मूल्यों का अत्यंत यथार्थपरक, संवेदनशील और व्यंग्यात्मक शैली में चित्रण किया है। उनकी रचनाओं में स्त्री न तो पूर्णतः विद्रोही है और न ही परंपरागत भूमिकाओं की निष्क्रिय अनुयायी; बल्कि वह सामाजिक संरचनाओं, पारिवारिक अपेक्षाओं तथा व्यक्तिगत आकांक्षाओं के मध्य निरंतर संतुलन स्थापित करने का प्रयास करती हुई दिखाई देती है। यही द्वंद्व उनके कथा साहित्य को समकालीन स्त्री-विमर्श का एक विशिष्ट अध्ययन-विषय बनाता है।

आधुनिक हिंदी कथा साहित्य में स्त्री-विमर्श का विकास भारतीय समाज में घटित सामाजिक, राजनीतिक, शैक्षिक तथा आर्थिक परिवर्तनों का परिणाम है। उन्नीसवीं शताब्दी के सामाजिक सुधार आंदोलनों से प्रारंभ होकर स्वतंत्रता-प्राप्ति के पश्चात स्त्री शिक्षा, संवैधानिक अधिकारों, आर्थिक सहभागिता तथा लोकतांत्रिक मूल्यों के विस्तार ने स्त्री की सामाजिक स्थिति में गुणात्मक परिवर्तन उत्पन्न किया। परिणामस्वरूप साहित्य में स्त्री का चित्रण भी आदर्शवादी, त्यागमयी और पराश्रित स्वरूप से आगे बढ़कर आत्मनिर्णयी, संघर्षशील तथा वैचारिक रूप से स्वतंत्र व्यक्तित्व के रूप में विकसित हुआ।

समकालीन हिंदी कथा साहित्य में स्त्री-विमर्श केवल स्त्री की समस्याओं का विवरण नहीं है, बल्कि यह पितृसत्तात्मक सत्ता-संरचनाओं, लैंगिक असमानताओं, सामाजिक रूढ़ियों, सांस्कृतिक पूर्वाग्रहों तथा शक्ति-संबंधों का आलोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। यह विमर्श स्त्री के अस्तित्व, अस्मिता, स्वायत्तता, श्रम, देह, भाषा तथा निर्णय क्षमता से जुड़े प्रश्नों को केंद्र में स्थापित करता है। साहित्यिक दृष्टि से यह विमर्श स्त्री पात्रों के अनुभव संसार, मनोवैज्ञानिक अंतर्द्वंद्व, सामाजिक संघर्ष तथा वैचारिक प्रतिरोध की अभिव्यक्ति का माध्यम बनता है।

मन्नू भंडारी, कृष्णा सोबती, उषा प्रियंवदा, मृदुला गर्ग, चित्रा मुद्गल, नासिरा शर्मा तथा ममता कालिया जैसी लेखिकाओं ने स्त्री जीवन के विविध आयामों को यथार्थवादी दृष्टिकोण से प्रस्तुत करते हुए हिंदी कथा साहित्य को नई वैचारिक दिशा प्रदान की। विशेषतः ममता कालिया ने मध्यवर्गीय शिक्षित स्त्री के दैनिक जीवन, आर्थिक संघर्ष, पारिवारिक उत्तरदायित्व तथा आत्मसम्मान के प्रश्नों को सहज, व्यंग्यात्मक तथा यथार्थपरक शैली में अभिव्यक्त किया है। इस प्रकार उनका साहित्य समकालीन स्त्री-विमर्श का महत्वपूर्ण पाठ बनकर उभरता है।

स्वतंत्रता के उपरांत भारतीय संविधान द्वारा प्रदत्त समानता, स्वतंत्रता एवं न्याय के सिद्धांतों ने स्त्री की सामाजिक स्थिति में परिवर्तन की आधारभूमि तैयार की। शिक्षा का विस्तार, रोजगार के अवसरों में वृद्धि, औद्योगिकीकरण, नगरीकरण, सूचना-प्रौद्योगिकी तथा वैश्वीकरण ने स्त्री की आर्थिक एवं सामाजिक सहभागिता को व्यापक बनाया। इसके परिणामस्वरूप स्त्री केवल परिवार तक सीमित भूमिका निभाने वाली इकाई न रहकर सार्वजनिक जीवन, प्रशासन, शिक्षा, विज्ञान, साहित्य, राजनीति तथा व्यवसाय के विविध क्षेत्रों में सक्रिय भागीदारी करने लगी।

स्त्री-स्वातंत्र्य की अवधारणा का तात्पर्य केवल सामाजिक बंधनों से मुक्ति नहीं है, बल्कि यह स्त्री के वैचारिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा भावनात्मक स्वायत्तता के अधिकार से संबंधित है। यह अवधारणा स्त्री को शिक्षा, रोजगार, संपत्ति, निर्णय, अभिव्यक्ति, गरिमा तथा समान अवसरों के अधिकार के रूप में देखती है। समकालीन स्त्री-विमर्श में स्वातंत्र्य का आशय पुरुष-विरोध नहीं, बल्कि समानता, सहभागिता और न्यायपूर्ण सामाजिक व्यवस्था की स्थापना से है। इसके विपरीत पारिवारिक उत्तरदायित्व भारतीय सामाजिक व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक मूल्य है, जिसके अंतर्गत परिवार के संरक्षण, सदस्यों की देखभाल, भावनात्मक सहयोग तथा सामाजिक दायित्वों के निर्वहन की अपेक्षा की जाती है। भारतीय समाज में इन उत्तरदायित्वों का प्रमुख भार ऐतिहासिक रूप से स्त्री पर केंद्रित रहा है। यही कारण है कि आधुनिक शिक्षित एवं कार्यरत स्त्री को स्वतंत्रता और उत्तरदायित्व के बीच संतुलन स्थापित करने की चुनौती का सामना करना पड़ता है।

ममता कालिया समकालीन हिंदी कथा साहित्य की प्रमुख रचनाकारों में अग्रणी स्थान रखती हैं। उन्होंने अपने कथा साहित्य में भारतीय मध्यवर्गीय समाज, स्त्री-जीवन, दाम्पत्य संबंधों, पारिवारिक विडंबनाओं, आर्थिक संघर्ष, सामाजिक विसंगतियों तथा बदलते जीवन मूल्यों का अत्यंत प्रामाणिक

चित्रण किया है। उनकी भाषा सहज, संप्रेषणीय, व्यंग्यात्मक तथा बोलचाल के जीवनानुभवों से संपृक्त है, जो उनके साहित्य को व्यापक पाठकीय स्वीकार्यता प्रदान करती है।

उनकी कथा-दृष्टि का केंद्र सामान्य मध्यवर्गीय स्त्री है, जो दैनिक जीवन के छोटे-छोटे संघर्षों, पारिवारिक अपेक्षाओं, आर्थिक दबावों तथा सामाजिक मानदंडों के बीच अपनी पहचान और आत्मसम्मान की रक्षा करती है। उनके स्त्री पात्र किसी वैचारिक घोषणापत्र के प्रतिनिधि नहीं, बल्कि सामाजिक यथार्थ के जीवंत चरित्र हैं। वे विद्रोह और समर्पण के चरम बिंदुओं के बीच संवाद, संतुलन और आत्मनिर्णय का मार्ग खोजती हैं। यही विशेषता ममता कालिया को समकालीन महिला कथाकारों में विशिष्ट स्थान प्रदान करती है।

वर्तमान सामाजिक परिदृश्य में स्त्री-स्वातंत्र्य, लैंगिक समानता, कार्य-जीवन संतुलन, भावनात्मक श्रम तथा पारिवारिक उत्तरदायित्व जैसे प्रश्न सामाजिक विज्ञान, साहित्य, मनोविज्ञान एवं जेंडर अध्ययन के प्रमुख विमर्शों में सम्मिलित हैं। इसके बावजूद ममता कालिया के कथा साहित्य में इन सभी आयामों का समेकित, तुलनात्मक एवं शोधपरक विश्लेषण अपेक्षाकृत सीमित दिखाई देता है। उपलब्ध अध्ययनों में प्रायः स्त्री-विमर्श, मध्यवर्गीय जीवन या दाम्पत्य संबंधों पर पृथक-पृथक विचार किया गया है, जबकि स्त्री-स्वातंत्र्य और पारिवारिक उत्तरदायित्व के अंतर्संबंध तथा उनके द्वंद्वात्मक स्वरूप का व्यापक परीक्षण अपेक्षित है।

2. ममता कालिया: व्यक्तित्व एवं साहित्यिक अवदान

समकालीन हिंदी साहित्य में ममता कालिया का नाम उन रचनाकारों में प्रमुखता से लिया जाता है जिन्होंने अपने कथा-साहित्य के माध्यम से भारतीय मध्यवर्गीय जीवन, स्त्री-अस्मिता, पारिवारिक संबंधों तथा बदलते सामाजिक मूल्यों का अत्यंत यथार्थपरक एवं संवेदनशील चित्रण किया है। उनका जन्म 2 नवम्बर 1940 को उत्तर प्रदेश के वृंदावन में हुआ। उनके पिता श्री विद्याभूषण अग्रवाल हिंदी तथा अंग्रेजी दोनों भाषाओं के विद्वान, शिक्षक एवं साहित्यप्रेमी थे, जबकि माता श्रीमती इंदुमती अग्रवाल सांस्कृतिक अभिरुचि से सम्पन्न थीं। पारिवारिक वातावरण में साहित्य, भाषा और बौद्धिक संवाद की सशक्त उपस्थिति ने उनके व्यक्तित्व के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। प्रारम्भिक शिक्षा के पश्चात उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य में उच्च शिक्षा प्राप्त की। साहित्य, अध्यापन और सांस्कृतिक गतिविधियों से उनका जुड़ाव आरम्भिक अवस्था से ही रहा, जिसने उनके लेखन को व्यापक बौद्धिक आधार प्रदान किया।

ममता कालिया का जीवन केवल साहित्य-सृजन तक सीमित नहीं रहा, बल्कि उन्होंने शिक्षण एवं प्रशासनिक दायित्वों का भी सफलतापूर्वक निर्वहन किया। विभिन्न शिक्षण संस्थानों में अध्यापन के उपरान्त उन्होंने इलाहाबाद (प्रयागराज) स्थित महिला सेवा सदन डिग्री कॉलेज की प्राचार्या के रूप में भी कार्य किया। अध्यापन और साहित्यिक सृजन के समानांतर अनुभवों ने उन्हें भारतीय मध्यवर्गीय समाज, विशेषकर शिक्षित एवं कार्यरत महिलाओं के जीवन-संघर्षों को निकट से देखने का अवसर प्रदान किया। यही कारण है कि उनके कथा-साहित्य में स्त्री-जीवन का चित्रण कल्पनाश्रित न होकर अनुभवजन्य यथार्थ पर आधारित दिखाई देता है। उनके व्यक्तित्व की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता सामाजिक यथार्थ के प्रति सजग दृष्टि, मानवीय संवेदनशीलता, व्यंग्यात्मक चेतना तथा जीवन के छोटे-छोटे अनुभवों को साहित्यिक रूप में रूपायित करने की अद्वितीय क्षमता है।

ममता कालिया की साहित्यिक यात्रा बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में उस समय आरम्भ हुई जब हिंदी साहित्य में 'नई कहानी' आंदोलन के प्रभाव से व्यक्ति की आंतरिक संवेदनाओं, मध्यवर्गीय जीवन, सामाजिक विघटन तथा अस्तित्वगत प्रश्नों पर विशेष ध्यान दिया जा रहा था। इसी साहित्यिक परिवेश में उन्होंने कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, संस्मरण तथा आत्मकथात्मक लेखन जैसी अनेक विधाओं में उल्लेखनीय योगदान दिया। यद्यपि उनकी रचनात्मक प्रतिभा विविध साहित्यिक विधाओं में समान रूप से सक्रिय रही, तथापि कथा-साहित्य ने उन्हें व्यापक प्रतिष्ठा प्रदान की। ममता कालिया का कथा-साहित्य विषय-वस्तु, शिल्प तथा सामाजिक संवेदना की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है। उनके उपन्यासों में *बेघर*, *नरक दर नरक*, *प्रेम कहानी*, *एक पत्नी के नोट्स* तथा *दौड़* विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इन कृतियों में मध्यवर्गीय परिवार, दाम्पत्य संबंध, स्त्री-अस्मिता, आर्थिक

संघर्ष, सामाजिक प्रतिष्ठा, बदलते पारिवारिक मूल्य तथा आधुनिक जीवन की जटिलताओं का यथार्थपरक चित्रण मिलता है। विशेष रूप से *एक पत्नी के नोट्स* दाम्पत्य संबंधों के भीतर स्त्री की मानसिक स्थिति, आत्माभिव्यक्ति तथा भावनात्मक संघर्ष को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करता है, जबकि *दौड़* वैश्वीकरण, उपभोक्तावादी संस्कृति और प्रतिस्पर्धी जीवन-शैली के प्रभावों का सूक्ष्म विश्लेषण करता है।

कहानी-साहित्य के क्षेत्र में भी ममता कालिया का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। उनके कहानी-संग्रहों में *छुटकारा*, *सीट नम्बर छह*, *प्रतिदिन*, *उसका यौवन*, *मुखौटा* तथा अन्य अनेक संग्रह विशेष रूप से चर्चित रहे हैं। उनकी कहानियाँ मध्यवर्गीय जीवन के सामान्य प्रतीत होने वाले प्रसंगों के माध्यम से सामाजिक संबंधों की गहन जटिलताओं को उद्घाटित करती हैं। उनके पात्र किसी असाधारण परिस्थिति के प्रतिनिधि नहीं होते, बल्कि वे दैनिक जीवन की वास्तविकताओं से जुड़े सामान्य व्यक्ति हैं। यही विशेषता उनके कथा-साहित्य को सामाजिक प्रामाणिकता प्रदान करती है। ममता कालिया के कथा-साहित्य की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता उसका जीवन-सापेक्ष यथार्थवाद है। वे जीवन की जटिलताओं को बिना किसी कृत्रिम आदर्शवाद अथवा अतिनाटकीयता के प्रस्तुत करती हैं। उनके यहाँ यथार्थ का चित्रण सामाजिक परिस्थितियों, मानवीय संबंधों तथा मनोवैज्ञानिक अनुभवों के समन्वय के साथ किया गया है। विशेषतः मध्यवर्गीय जीवन उनकी रचनाओं का केंद्रीय आधार है, जहाँ आर्थिक सीमाएँ, सामाजिक प्रतिष्ठा, पारिवारिक अपेक्षाएँ और व्यक्तिगत आकांक्षाएँ निरंतर परस्पर अंतःक्रिया करती रहती हैं।

उनके कथा-साहित्य का दूसरा महत्वपूर्ण पक्ष स्त्री-अनुभवों का प्रामाणिक चित्रण है। वे स्त्री को केवल शोषण की प्रतीक या विद्रोह की प्रतिनिधि के रूप में प्रस्तुत नहीं करतीं, बल्कि उसे सामाजिक उत्तरदायित्वों का निर्वहन करते हुए आत्मसम्मान, स्वायत्तता और वैचारिक स्वतंत्रता की खोज करने वाले व्यक्तित्व के रूप में चित्रित करती हैं। उनके स्त्री पात्रों का संघर्ष बाहरी परिस्थितियों से जितना जुड़ा है, उतना ही उनके आंतरिक मनोविज्ञान, भावनात्मक संवेदनाओं तथा आत्मनिर्णय की प्रक्रिया से भी संबंधित है।

उनकी रचनाओं में व्यंग्य एक प्रभावशाली अभिव्यक्ति-तत्त्व के रूप में उपस्थित है। यह व्यंग्य केवल हास्य उत्पन्न करने का माध्यम नहीं, बल्कि सामाजिक विसंगतियों, पाखंड, लैंगिक असमानताओं तथा मध्यवर्गीय मानसिकता की आलोचनात्मक व्याख्या का सशक्त उपकरण है। इसके अतिरिक्त उनकी कहानियों और उपन्यासों में संवादों की स्वाभाविकता, पात्रों की मनोवैज्ञानिक विश्वसनीयता तथा कथानक की सहजता पाठक को कथा-जगत से गहरे स्तर पर जोड़ती है। शिल्प की दृष्टि से उनका कथा-साहित्य सादगी और संरचनात्मक संतुलन का उत्कृष्ट उदाहरण है। वे अनावश्यक वर्णनात्मक विस्तार के स्थान पर संक्षिप्त, सघन और प्रभावी कथन शैली का प्रयोग करती हैं। पात्रों का चरित्र-विकास घटनाओं की अपेक्षा उनके व्यवहार, संवाद, मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रियाओं तथा सामाजिक परिस्थितियों के माध्यम से होता है। उनके कथानकों में बाह्य घटनाओं की अपेक्षा संबंधों की आंतरिक जटिलताओं और मानसिक प्रक्रियाओं को अधिक महत्व दिया गया है। इससे उनकी रचनाओं में मनोवैज्ञानिक यथार्थ और सामाजिक यथार्थ का प्रभावी समन्वय दिखाई देता है।

अभिव्यक्ति की दृष्टि से ममता कालिया का लेखन संतुलित, व्यंग्यप्रधान, संवेदनात्मक तथा विश्लेषणात्मक है। वे जीवन की साधारण घटनाओं में निहित सामाजिक अर्थों को सूक्ष्म दृष्टि से उद्घाटित करती हैं। उनकी अभिव्यक्ति में कहीं भी अनावश्यक भावुकता या वैचारिक आग्रह नहीं दिखाई देता; इसके स्थान पर अनुभव की प्रामाणिकता, सामाजिक अवलोकन और मानवीय संवेदना का संतुलित रूप उपस्थित रहता है। यही विशेषता उनके कथा-साहित्य को अकादमिक अध्ययन की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण बनाती है, क्योंकि उनकी रचनाएँ समकालीन भारतीय समाज में स्त्री-स्वातंत्र्य, पारिवारिक उत्तरदायित्व, लैंगिक संबंधों तथा मध्यवर्गीय जीवन की संरचना का बहुआयामी विश्लेषण प्रस्तुत करती हैं।

3. ममता कालिया के कथा साहित्य में स्त्री-स्वातंत्र्य की अवधारणा

समकालीन हिंदी कथा-साहित्य में स्त्री-स्वातंत्र्य की अवधारणा केवल सामाजिक बंधनों से मुक्ति का प्रश्न नहीं है, बल्कि यह स्त्री की वैचारिक स्वायत्तता, आत्मनिर्णय, आर्थिक स्वतंत्रता, सामाजिक समानता तथा मानवीय गरिमा से संबंधित एक बहुआयामी विमर्श है। आधुनिक स्त्री-विमर्श

के विकास के साथ यह धारणा स्थापित हुई कि स्त्री को केवल पारिवारिक भूमिकाओं के आधार पर परिभाषित नहीं किया जा सकता, बल्कि उसे एक स्वतंत्र व्यक्तित्व के रूप में स्वीकार करना आवश्यक है। इस संदर्भ में ममता कालिया का कथा-साहित्य भारतीय मध्यवर्गीय स्त्री के जीवनानुभवों का अत्यंत प्रामाणिक दस्तावेज़ है। उनकी रचनाओं में स्त्री-स्वातंत्र्य किसी उग्र वैचारिक प्रतिरोध का पर्याय नहीं है, बल्कि जीवन की व्यावहारिक परिस्थितियों में आत्मसम्मान, निर्णय-क्षमता और सामाजिक उत्तरदायित्व के बीच संतुलन स्थापित करने की प्रक्रिया है।

ममता कालिया के कथा-साहित्य का सामाजिक आधार स्वतंत्रता-उत्तर भारत का परिवर्तित मध्यवर्गीय समाज है, जहाँ शिक्षा, रोजगार, नगरीकरण और वैश्वीकरण के प्रभाव से स्त्री की भूमिका में उल्लेखनीय परिवर्तन आया है। *बेघर*, *एक पत्नी के नोट्स*, *दौड़* तथा *नरक दर नरक* जैसे उपन्यासों में स्त्री पात्र परंपरा और आधुनिकता के मध्य स्थित उस संक्रमणशील समाज का प्रतिनिधित्व करते हैं, जहाँ स्वतंत्रता की आकांक्षा और पारिवारिक उत्तरदायित्व समान रूप से सक्रिय रहते हैं। उनकी स्त्री पात्र पारिवारिक संरचना को अस्वीकार नहीं करतीं, बल्कि उसमें अपनी वैचारिक उपस्थिति और समान भागीदारी सुनिश्चित करना चाहती हैं। यही कारण है कि उनके साहित्य में स्त्री-स्वातंत्र्य का स्वर विद्रोह की अपेक्षा आत्मस्वीकृति, संवाद और सामाजिक पुनर्संरचना का स्वर अधिक प्रतीत होता है।

ममता कालिया के कथा-साहित्य का एक केंद्रीय प्रतिपाद्य स्त्री के आत्मनिर्णय और व्यक्तित्व की खोज है। उनके अनुसार स्त्री का वास्तविक विकास तभी संभव है जब उसे अपने जीवन से संबंधित निर्णय लेने की स्वतंत्रता प्राप्त हो। विवाह, शिक्षा, रोजगार, मातृत्व, सामाजिक संबंध तथा व्यक्तिगत आकांक्षाओं से जुड़े निर्णय यदि केवल सामाजिक दबावों के आधार पर निर्धारित किए जाएँ, तो स्त्री का व्यक्तित्व सीमित हो जाता है। यही कारण है कि उनकी रचनाओं में स्त्री पात्र अपने जीवन की दिशा स्वयं निर्धारित करने की चेतना विकसित करती दिखाई देती हैं।

एक पत्नी के नोट्स इस दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण उपन्यास है। इसमें दाम्पत्य जीवन के भीतर स्त्री की मानसिक संवेदनाओं, उपेक्षाओं और आत्माभिव्यक्ति की आकांक्षाओं का गहन चित्रण मिलता है। उपन्यास की नायिका केवल एक आदर्श पत्नी की भूमिका तक सीमित नहीं रहना चाहती, बल्कि वह अपने विचारों, भावनाओं और व्यक्तित्व को भी समान महत्व दिलाना चाहती है। उसकी आत्मकथात्मक अभिव्यक्ति यह संकेत देती है कि आत्मनिर्णय का प्रश्न केवल सामाजिक स्वतंत्रता का नहीं, बल्कि मानसिक स्वतंत्रता का भी है।

इसी प्रकार *बेघर* में स्त्री की पहचान का संकट केवल भौतिक घर की अनुपस्थिति नहीं, बल्कि भावनात्मक और सामाजिक स्वीकार्यता की खोज का प्रतीक बन जाता है। पात्रों के अनुभव यह स्पष्ट करते हैं कि यदि स्त्री को परिवार और समाज में सम्मानजनक स्थान नहीं मिलता, तो उसका आत्मविश्वास और व्यक्तित्व दोनों प्रभावित होते हैं। *नरक दर नरक* में भी स्त्री के मानसिक संघर्षों के माध्यम से यह दर्शाया गया है कि आत्मनिर्णय के अभाव में व्यक्ति का अस्तित्व निरंतर दमन और असंतोष का अनुभव करता है।

ममता कालिया की कहानियों में भी स्त्री का व्यक्तित्व उसकी वैचारिक सक्रियता से निर्मित होता है। *छुटकारा* तथा *मुखौटा* जैसी कहानियाँ यह संकेत देती हैं कि सामाजिक भूमिकाओं के पीछे छिपी स्त्री अपनी वास्तविक पहचान की तलाश में निरंतर संघर्षरत रहती है। लेखिका आत्मनिर्णय को परिवार-विरोधी दृष्टिकोण के रूप में नहीं, बल्कि स्वस्थ पारिवारिक संबंधों की आधारशिला के रूप में प्रस्तुत करती हैं। उनके अनुसार सम्मानजनक संबंध वही हैं जिनमें स्त्री को अपने विचार व्यक्त करने और जीवन के निर्णयों में समान सहभागिता प्राप्त हो।

3.1 आर्थिक आत्मनिर्भरता और स्त्री की स्वायत्तता

ममता कालिया के कथा-साहित्य में आर्थिक आत्मनिर्भरता स्त्री-स्वातंत्र्य का अत्यंत महत्वपूर्ण आयाम है। लेखिका का मानना है कि आर्थिक रूप से पराश्रित स्त्री सामाजिक और पारिवारिक निर्णयों में अपेक्षित भूमिका निभाने में प्रायः असमर्थ रहती है। इसलिए उनके साहित्य में नौकरीपेशा, शिक्षित और आत्मनिर्भर स्त्रियों का चित्रण बार-बार दिखाई देता है। आर्थिक स्वतंत्रता उनके यहाँ केवल आय अर्जित करने का माध्यम नहीं, बल्कि आत्मविश्वास, सम्मान और स्वायत्त अस्तित्व का आधार है।

दौड़ में आधुनिक महानगरीय जीवन, प्रतिस्पर्धा और आर्थिक संरचना के संदर्भ में स्त्री की भूमिका का यथार्थपरक चित्रण मिलता है। यहाँ आर्थिक सफलता जीवन की अनिवार्यता बन चुकी है, किन्तु स्त्री के लिए यह उपलब्धि अतिरिक्त उत्तरदायित्व भी लेकर आती है। कार्यस्थल पर दक्षता सिद्ध करने के साथ-साथ परिवार की अपेक्षाओं का निर्वहन भी उसी से अपेक्षित रहता है। यह द्वैध स्थिति स्त्री के श्रम और मानसिक दबाव को और अधिक जटिल बना देती है।

एक पत्नी के नोट्स तथा बेघर में भी आर्थिक आत्मनिर्भरता स्त्री को आत्मसम्मान प्रदान करती है, किन्तु लेखिका यह भी स्पष्ट करती हैं कि केवल आर्थिक स्वतंत्रता पर्याप्त नहीं है। यदि पारिवारिक संबंधों में समानता, सम्मान और संवाद का अभाव हो, तो आर्थिक आत्मनिर्भरता भी स्त्री की पूर्ण स्वायत्तता सुनिश्चित नहीं कर सकती। इसलिए ममता कालिया आर्थिक स्वतंत्रता को सामाजिक चेतना और लैंगिक समानता से जोड़कर देखती हैं।

3.2 शिक्षा, रोजगार और आधुनिक स्त्री

ममता कालिया के कथा-साहित्य में शिक्षा और रोजगार आधुनिक स्त्री के व्यक्तित्व-निर्माण के आधारभूत तत्व हैं। शिक्षा स्त्री को केवल ज्ञान प्रदान नहीं करती, बल्कि उसे वैचारिक स्वतंत्रता, आलोचनात्मक दृष्टि तथा आत्मविश्वास से भी संपन्न बनाती है। इसी प्रकार रोजगार उसे आर्थिक स्वावलंबन, सामाजिक पहचान और निर्णय लेने की क्षमता प्रदान करता है। इसलिए उनकी रचनाओं में शिक्षित एवं कार्यरत स्त्री आधुनिक भारतीय समाज की नई चेतना का प्रतिनिधित्व करती दिखाई देती है।

दौड़ में बदलती आर्थिक व्यवस्था और पेशेवर जीवन की चुनौतियों के बीच स्त्री का संघर्ष अत्यंत प्रभावशाली रूप से चित्रित हुआ है। आधुनिक जीवन की तीव्र गति, प्रतिस्पर्धा और समयाभाव के बीच स्त्री को अपने व्यावसायिक दायित्वों के साथ-साथ परिवार की अपेक्षाओं को भी पूरा करना पड़ता है। यह परिस्थिति उसके जीवन को जटिल अवश्य बनाती है, किन्तु वह इससे पलायन नहीं करती; बल्कि नई परिस्थितियों के अनुरूप स्वयं को विकसित करने का प्रयास करती है।

प्रतिदिन तथा सीट नम्बर छह जैसी कहानियों में भी शिक्षित मध्यवर्गीय स्त्री के जीवन की विविध परिस्थितियाँ सामने आती हैं। लेखिका यह स्पष्ट करती हैं कि शिक्षा केवल औपचारिक योग्यता नहीं, बल्कि सामाजिक चेतना और आत्मसम्मान का आधार है। शिक्षित स्त्री अपने अधिकारों, कर्तव्यों और सामाजिक उत्तरदायित्वों के प्रति अधिक सजग होती है। वह परंपराओं को आँख मूँदकर स्वीकार नहीं करती, बल्कि तर्क और विवेक के आधार पर उनका मूल्यांकन करती है।

ममता कालिया यह भी स्वीकार करती हैं कि शिक्षा और रोजगार के बावजूद स्त्री को लैंगिक असमानता, कार्यस्थल की चुनौतियों तथा पारिवारिक पूर्वाग्रहों का सामना करना पड़ता है। फिर भी उनकी रचनाओं की स्त्री निराश नहीं होती, बल्कि आत्मविश्वास और कर्मठता के माध्यम से अपनी पहचान निर्मित करती है। यही दृष्टि उनके साहित्य को समकालीन सामाजिक यथार्थ से जोड़ती है।

3.3 पितृसत्तात्मक व्यवस्था के विरुद्ध प्रतिरोध

ममता कालिया का कथा-साहित्य पितृसत्तात्मक व्यवस्था के विरुद्ध एक संतुलित और यथार्थवादी प्रतिरोध का साहित्य है। उनकी रचनाओं में स्त्री किसी क्रांतिकारी घोषणापत्र की प्रतिनिधि नहीं है, बल्कि वह अपने दैनिक जीवन के अनुभवों, संवादों, प्रश्नों और निर्णयों के माध्यम से पितृसत्तात्मक संरचनाओं को चुनौती देती है। यह प्रतिरोध मुखर नारों की अपेक्षा वैचारिक आत्मविश्वास, आत्मसम्मान और व्यवहारिक परिवर्तन के रूप में अभिव्यक्त होता है।

एक पत्नी के नोट्स में दाम्पत्य संबंधों के भीतर पुरुष-प्रधान मानसिकता का सूक्ष्म विश्लेषण मिलता है। नायिका यह अनुभव करती है कि विवाह संस्था में समानता का दावा होने के बावजूद निर्णय लेने का अधिकार प्रायः पुरुष के पक्ष में केंद्रित रहता है। वह इस असमानता को मौन रूप से स्वीकार नहीं करती, बल्कि अपने अनुभवों, विचारों और आत्माभिव्यक्ति के माध्यम से उसका प्रतिरोध करती है। इसी प्रकार नरक दर नरक और

बेघर में भी सामाजिक मानदंडों, पारिवारिक नियंत्रणों तथा लैंगिक पूर्वाग्रहों के कारण उत्पन्न स्त्री-संघर्ष को लेखिका ने अत्यंत संवेदनशीलता से चित्रित किया है। कहानी-साहित्य में भी पितृसत्ता के अनेक सूक्ष्म रूप दिखाई देते हैं। *मुखौटा* तथा *छटकारा* जैसी कहानियों में सामाजिक आडंबर, पुरुष वर्चस्व और स्त्री से जुड़ी रूढ़ धारणाओं की आलोचना की गई है। लेखिका यह स्पष्ट करती हैं कि पितृसत्ता केवल सामाजिक संस्था नहीं, बल्कि एक मानसिक संरचना भी है, जिसे बदलने के लिए स्त्री और पुरुष दोनों की वैचारिक चेतना का विकास आवश्यक है।

3.4 आत्मसम्मान, अस्मिता और स्त्री चेतना

ममता कालिया के कथा-साहित्य में आत्मसम्मान, अस्मिता और स्त्री-चेतना स्त्री-स्वातंत्र्य के सबसे महत्वपूर्ण आयाम हैं। उनके अनुसार स्त्री की वास्तविक स्वतंत्रता बाह्य उपलब्धियों से अधिक उसकी आंतरिक चेतना, आत्मविश्वास और स्वाभिमान पर आधारित होती है। यदि स्त्री स्वयं अपने अस्तित्व का सम्मान नहीं करती, तो सामाजिक परिवर्तन भी अधूरा रह जाता है। इसलिए उनकी रचनाओं में आत्मसम्मान केवल व्यक्तिगत गुण नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय और मानवीय गरिमा का प्रश्न बनकर उभरता है।

बेघर की स्त्री पात्र अपने अस्तित्व और पहचान की निरंतर खोज में दिखाई देती हैं। वे केवल सामाजिक स्वीकृति प्राप्त करने का प्रयास नहीं करतीं, बल्कि स्वयं को समझने और अपनी गरिमा की रक्षा करने का भी प्रयास करती हैं। *एक पत्नी के नोट्स* में आत्माभिव्यक्ति का स्वर स्त्री की चेतना के विकास का संकेत है। वहीं *दौड़* और *नरक दर नरक* में आधुनिक जीवन की चुनौतियों के बीच स्त्री अपने आत्मसम्मान को बनाए रखने के लिए निरंतर संघर्ष करती है। *प्रतिदिन*, *सीट नम्बर छह* और अन्य प्रतिनिधि कहानियों में भी स्त्री-चेतना का विकास जीवन की छोटी-छोटी घटनाओं के माध्यम से होता है। लेखिका यह दर्शाती हैं कि आत्मसम्मान किसी बाहरी उपलब्धि का परिणाम नहीं, बल्कि स्वयं के व्यक्तित्व, श्रम, विचार और अस्तित्व की स्वीकृति से उत्पन्न होता है। यही चेतना स्त्री को अन्याय, असमानता और उपेक्षा के विरुद्ध खड़ा होने की नैतिक शक्ति प्रदान करती है।

समग्रतः ममता कालिया का कथा-साहित्य यह स्थापित करता है कि स्त्री-स्वातंत्र्य का वास्तविक अर्थ केवल सामाजिक प्रतिबंधों से मुक्ति नहीं, बल्कि आत्मसम्मान, वैचारिक स्वतंत्रता, आर्थिक स्वायत्तता, समान सहभागिता तथा मानवीय गरिमा पर आधारित जीवन की स्थापना है। उनके स्त्री पात्र भारतीय समाज की बदलती चेतना के प्रतिनिधि हैं, जो परंपरा और आधुनिकता के मध्य संतुलन स्थापित करते हुए अपनी अस्मिता, स्वायत्तता और सामाजिक उत्तरदायित्व—तीनों को समान महत्व देते हैं। यही दृष्टि उनके कथा-साहित्य को समकालीन हिंदी स्त्री-विमर्श की एक सशक्त और स्थायी उपलब्धि के रूप में प्रतिष्ठित करती है।

4. ममता कालिया के कथा साहित्य में पारिवारिक उत्तरदायित्व का स्वरूप

भारतीय समाज में परिवार केवल जैविक अथवा वैधानिक संस्था नहीं, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक तथा नैतिक मूल्यों के संरक्षण और संवहन का प्रमुख माध्यम रहा है। परिवार व्यक्ति के समाजीकरण, मूल्य-निर्माण, भावनात्मक सुरक्षा तथा सामाजिक उत्तरदायित्वों के विकास की आधारभूत इकाई के रूप में कार्य करता है। भारतीय सांस्कृतिक परंपरा में परिवार का स्वरूप सामूहिकता, परस्पर सहयोग, त्याग, सहिष्णुता और उत्तरदायित्व की भावना पर आधारित माना गया है। यद्यपि आधुनिकता, नगरीकरण, औद्योगिकीकरण तथा वैश्वीकरण के प्रभावों ने पारिवारिक संरचना में अनेक परिवर्तन किए हैं, तथापि भारतीय समाज में परिवार आज भी सामाजिक जीवन का सबसे प्रभावशाली संस्थागत ढाँचा बना हुआ है।

ममता कालिया के कथा-साहित्य में परिवार किसी स्थिर और आदर्शीकृत संस्था के रूप में नहीं, बल्कि परिवर्तनशील सामाजिक संरचना के रूप में प्रस्तुत होता है। उनके उपन्यासों और कहानियों में परिवार प्रेम, सहयोग और आत्मीयता का केंद्र होने के साथ-साथ सत्ता-संबंधों, अपेक्षाओं, संघर्षों और दायित्वों का भी क्षेत्र है। विशेषतः मध्यवर्गीय परिवारों में आर्थिक सीमाएँ, सामाजिक प्रतिष्ठा, नैतिक मानदंड तथा पारिवारिक मर्यादाएँ व्यक्ति

के व्यवहार को गहराई से प्रभावित करती हैं। लेखिका यह स्पष्ट करती हैं कि परिवार केवल संबंधों का समूह नहीं, बल्कि भूमिकाओं, उत्तरदायित्वों और सामाजिक अपेक्षाओं का जटिल तंत्र है, जिसमें स्त्री की भूमिका अत्यंत केंद्रीय होती है।

बेघर, एक पत्नी के नोट्स, *दौड़* तथा *नरक दर नरक* जैसे उपन्यासों में परिवार के भीतर बदलते संबंधों, पीढ़ीगत अंतर, आर्थिक दबाव तथा आधुनिक जीवन-शैली के प्रभावों का यथार्थपरक चित्रण मिलता है। लेखिका यह दर्शाती हैं कि आधुनिक परिवारों में व्यक्तिगत स्वतंत्रता और सामूहिक उत्तरदायित्व के बीच संतुलन स्थापित करना एक बड़ी चुनौती बन गया है। इस संदर्भ में परिवार का अध्ययन केवल सामाजिक संस्था के रूप में नहीं, बल्कि लैंगिक भूमिकाओं, शक्ति-संबंधों और सांस्कृतिक अपेक्षाओं के विश्लेषण के रूप में भी आवश्यक हो जाता है। ममता कालिया का कथा-साहित्य इसी परिवर्तनशील पारिवारिक संरचना का सजीव समाजशास्त्रीय एवं मनोवैज्ञानिक दस्तावेज प्रस्तुत करता है।

4.1 पत्नी के रूप में स्त्री

ममता कालिया के कथा-साहित्य में पत्नी की भूमिका पारंपरिक आदर्शों और आधुनिक चेतना के मध्य निरंतर संवाद का विषय है। भारतीय समाज में पत्नी को परिवार की धुरी माना गया है, जिससे त्याग, समर्पण, सहनशीलता और परिवार के प्रति पूर्ण निष्ठा की अपेक्षा की जाती रही है। किन्तु समकालीन सामाजिक परिवर्तनों ने इस भूमिका को पुनर्परिभाषित किया है। शिक्षित और कार्यरत स्त्री अब केवल पारिवारिक उत्तरदायित्वों का निर्वहन करने वाली नहीं, बल्कि दाम्पत्य संबंधों में समान भागीदारी, सम्मान और संवाद की अपेक्षा रखने वाली व्यक्तित्व-संपन्न इकाई के रूप में उभरती है।

एक पत्नी के नोट्स इस संदर्भ में ममता कालिया की अत्यंत महत्वपूर्ण कृति है। इसमें दाम्पत्य जीवन के भीतर स्त्री के अनुभवों, भावनात्मक अपेक्षाओं, मानसिक तनावों तथा आत्मसम्मान की आकांक्षा का सूक्ष्म विश्लेषण मिलता है। उपन्यास यह स्पष्ट करता है कि पत्नी का दायित्व केवल घरेलू कार्यों तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि उसे वैचारिक समानता और निर्णय प्रक्रिया में सहभागिता भी प्राप्त होनी चाहिए। लेखिका दाम्पत्य संबंध को अधिकार और कर्तव्य की एकतरफा व्यवस्था के रूप में नहीं, बल्कि परस्पर सम्मान, संवेदनशीलता और साझेदारी पर आधारित संबंध के रूप में स्थापित करती हैं।

नरक दर नरक तथा *बेघर* में भी पत्नी की भूमिका अनेक स्तरों पर उभरकर सामने आती है। यहाँ स्त्री आर्थिक, सामाजिक और भावनात्मक सभी प्रकार के उत्तरदायित्व निभाती है, किन्तु उसके श्रम और संवेदनाओं का मूल्यांकन सदैव समान रूप से नहीं किया जाता। लेखिका इस असंतुलन की आलोचना करते हुए यह संकेत देती हैं कि आधुनिक दाम्पत्य संबंधों की सफलता समानता, संवाद और पारस्परिक विश्वास पर निर्भर करती है। उनके कथा-साहित्य में पत्नी का चरित्र समर्पण और आत्मसम्मान के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास करता है, जो समकालीन भारतीय स्त्री की वास्तविक स्थिति का प्रतिनिधित्व करता है।

4.2 माँ के रूप में स्त्री

भारतीय सांस्कृतिक परंपरा में माँ को करुणा, त्याग, संरक्षण और ममता की सर्वोच्च प्रतीक माना गया है। मातृत्व को स्त्री के व्यक्तित्व का महत्वपूर्ण आयाम स्वीकार करते हुए समाज उससे निःस्वार्थ समर्पण और परिवार के प्रति पूर्ण उत्तरदायित्व की अपेक्षा करता है। ममता कालिया इस पारंपरिक अवधारणा को स्वीकार करते हुए भी उसके भीतर निहित सामाजिक और मनोवैज्ञानिक जटिलताओं का विश्लेषण करती हैं। उनके साहित्य में माँ केवल त्यागमयी आदर्श नहीं, बल्कि संवेदनशील, संघर्षशील और परिस्थितियों से जूझने वाली एक जीवंत मनुष्य है।

उनके उपन्यासों और कहानियों में माँ का चरित्र बच्चों के पालन-पोषण, शिक्षा, संस्कार, पारिवारिक संतुलन तथा भावनात्मक सुरक्षा की केंद्रीय भूमिका निभाता है। विशेषतः मध्यवर्गीय परिवारों में आर्थिक सीमाओं और सामाजिक दबावों के बीच माँ को अनेक प्रकार के समझौते करने पड़ते हैं। *दौड़* में आधुनिक जीवन की व्यस्तता और प्रतिस्पर्धा के कारण मातृत्व की बदलती परिस्थितियों का संकेत मिलता है, जहाँ कार्यरत महिला

अपने व्यावसायिक दायित्वों और पारिवारिक उत्तरदायित्वों के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास करती है। यह संतुलन उसके लिए केवल समय-प्रबंधन का प्रश्न नहीं, बल्कि भावनात्मक उत्तरदायित्व का भी विषय बन जाता है।

4.3 पारिवारिक दायित्व और भावनात्मक श्रम

ममता कालिया के कथा-साहित्य का एक अत्यंत महत्वपूर्ण पक्ष पारिवारिक दायित्वों के साथ जुड़े भावनात्मक श्रम (Emotional Labour) का चित्रण है। आधुनिक समाजशास्त्रीय और स्त्रीवादी विमर्श में भावनात्मक श्रम से आशय उन मानसिक, भावनात्मक और संबंधपरक दायित्वों से है, जिनका निर्वहन प्रायः स्त्रियों द्वारा किया जाता है, किन्तु जिनकी सामाजिक मान्यता और मूल्यांकन अपेक्षाकृत कम होता है। परिवार के सदस्यों की भावनाओं का ध्यान रखना, संबंधों में सामंजस्य बनाए रखना, तनावपूर्ण परिस्थितियों को नियंत्रित करना, बच्चों और वृद्धजनों की देखभाल करना तथा पारिवारिक वातावरण को संतुलित बनाए रखना—ये सभी कार्य भावनात्मक श्रम के अंतर्गत आते हैं।

एक पत्नी के नोट्स इस संदर्भ में विशेष रूप से उल्लेखनीय है। उपन्यास में नायिका केवल घरेलू कार्यों का ही निर्वहन नहीं करती, बल्कि पति, परिवार और संबंधों के बीच भावनात्मक संतुलन बनाए रखने का प्रयास भी करती है। उसके इस अदृश्य श्रम की सामाजिक मान्यता नहीं मिलती, जिसके परिणामस्वरूप उसके भीतर मानसिक तनाव और आत्म-अभिव्यक्ति की आकांक्षा विकसित होती है। *नरक दर नरक* तथा *प्रतिदिन* जैसी रचनाओं में भी स्त्री के इसी अदृश्य मानसिक श्रम का यथार्थपरक चित्रण मिलता है।

ममता कालिया इस तथ्य को रेखांकित करती हैं कि परिवार के सुचारु संचालन में भावनात्मक श्रम की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है, किन्तु इसका भार लगभग पूर्णतः स्त्री पर डाल देना लैंगिक असमानता को बढ़ाता है। वे पारिवारिक उत्तरदायित्वों के समान वितरण और भावनात्मक श्रम की सामाजिक स्वीकृति की आवश्यकता पर बल देती हैं। उनके कथा-साहित्य में यह विचार अप्रत्यक्ष रूप से स्थापित होता है कि स्वस्थ पारिवारिक संबंध तभी संभव हैं जब घरेलू एवं भावनात्मक दायित्वों को साझा उत्तरदायित्व के रूप में स्वीकार किया जाए।

4.4 मध्यवर्गीय परिवार की अपेक्षाएँ

ममता कालिया का कथा-साहित्य मूलतः भारतीय मध्यवर्गीय समाज का साहित्य है। उनके अधिकांश पात्र ऐसे परिवारों से आते हैं जहाँ सीमित आर्थिक संसाधन, सामाजिक प्रतिष्ठा, नैतिक मान्यताएँ और सांस्कृतिक परंपराएँ व्यक्ति के व्यवहार को नियंत्रित करती हैं। मध्यवर्गीय परिवारों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे आधुनिकता को स्वीकार तो करते हैं, किन्तु परंपरागत मूल्यों से पूर्णतः मुक्त नहीं हो पाते। परिणामस्वरूप विशेषकर स्त्री से यह अपेक्षा की जाती है कि वह आधुनिक भी बने और पारंपरिक आदर्शों का निर्वहन भी समान रूप से करे।

ममता कालिया का विश्लेषण यह संकेत देता है कि मध्यवर्गीय परिवारों में स्त्री से जुड़ी अपेक्षाएँ समय के साथ बदली अवश्य हैं, परंतु वे पूर्णतः समाप्त नहीं हुई हैं। आधुनिक शिक्षित स्त्री से आर्थिक योगदान, पारिवारिक समर्पण, भावनात्मक संवेदनशीलता और सामाजिक मर्यादा—सभी का एक साथ निर्वहन करने की अपेक्षा की जाती है। यही बहुआयामी उत्तरदायित्व उनके जीवन में तनाव, संघर्ष और आत्मचिंतन की परिस्थितियाँ उत्पन्न करते हैं। फिर भी लेखिका निराशावादी दृष्टिकोण प्रस्तुत नहीं करती; वे परिवार को एक ऐसी परिवर्तनशील संस्था के रूप में देखती हैं जहाँ संवाद, समानता, पारस्परिक सम्मान और साझा उत्तरदायित्व के आधार पर अधिक न्यायपूर्ण और संतुलित संबंधों की स्थापना संभव है।

5. प्रमुख निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन में ममता कालिया के चयनित उपन्यासों—*बेघर*, *एक पत्नी के नोट्स*, *दौड़* तथा *नरक दर नरक*—और प्रतिनिधि कहानियों—*सीट नम्बर छह*, *प्रतिदिन*, *छुटकारा*, *मुखौटा* आदि—के पाठ-विश्लेषण के आधार पर स्त्री-स्वातंत्र्य और पारिवारिक उत्तरदायित्व के अंतर्संबंधों का आलोचनात्मक अध्ययन किया गया। अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि ममता कालिया का कथा-साहित्य समकालीन भारतीय मध्यवर्गीय समाज में स्त्री की बदलती स्थिति, उसके आत्मसंघर्ष, सामाजिक भूमिकाओं तथा पारिवारिक उत्तरदायित्वों का अत्यंत प्रामाणिक एवं बहुआयामी चित्रण

प्रस्तुत करता है। उनके साहित्य में स्त्री-स्वातंत्र्य का अर्थ पारिवारिक संबंधों से विमुख होना नहीं, बल्कि समानता, सम्मान, आत्मनिर्णय और साझा उत्तरदायित्वों पर आधारित जीवन-दृष्टि का निर्माण है। प्रस्तुत अध्ययन से निम्नलिखित प्रमुख निष्कर्ष प्राप्त हुए—

अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि ममता कालिया के कथा-साहित्य में स्त्री-स्वातंत्र्य की अवधारणा बहुआयामी स्वरूप ग्रहण करती है। उनके यहाँ स्वतंत्रता केवल सामाजिक प्रतिबंधों से मुक्ति तक सीमित नहीं है, बल्कि वैचारिक स्वायत्तता, आत्मनिर्णय, आर्थिक आत्मनिर्भरता, भावनात्मक गरिमा, आत्मसम्मान तथा सामाजिक सहभागिता से भी जुड़ी हुई है। *बेघर* और *एक पत्नी के नोट्स* जैसे उपन्यासों में स्त्री अपने अस्तित्व की खोज केवल पारिवारिक भूमिकाओं के माध्यम से नहीं करती, बल्कि स्वयं को एक स्वतंत्र व्यक्तित्व के रूप में स्थापित करने का प्रयास करती है। इसी प्रकार *दौड़* और *नरक दर नरक* में आधुनिक जीवन की चुनौतियों के बीच स्त्री अपने निर्णयों, आत्मविश्वास और आत्मसम्मान को बनाए रखने का निरंतर प्रयास करती दिखाई देती है।

अध्ययन यह भी दर्शाता है कि लेखिका स्त्री-स्वातंत्र्य को पश्चिमी अर्थों में व्यक्तिवादी स्वतंत्रता के रूप में प्रस्तुत नहीं करती, बल्कि भारतीय सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भों में समानता, संवाद और साझेदारी पर आधारित स्वतंत्रता की अवधारणा विकसित करती हैं। उनके पात्र विद्रोह की अपेक्षा विवेकपूर्ण प्रतिरोध, आत्मविश्वास और सामाजिक उत्तरदायित्व के माध्यम से अपनी स्वतंत्र पहचान निर्मित करते हैं।

प्रस्तुत अध्ययन से यह प्रमाणित होता है कि ममता कालिया का कथा-साहित्य भारतीय मध्यवर्गीय स्त्री के जीवनानुभवों का अत्यंत विश्वसनीय सामाजिक दस्तावेज है। उनके अधिकांश पात्र शिक्षित, कार्यरत अथवा गृहिणी मध्यवर्गीय महिलाएँ हैं, जो आर्थिक सीमाओं, सामाजिक प्रतिष्ठा, पारिवारिक अपेक्षाओं तथा व्यक्तिगत आकांक्षाओं के मध्य निरंतर संतुलन स्थापित करने का प्रयास करती हैं। लेखिका उनके जीवन का चित्रण किसी आदर्शवादी दृष्टिकोण से नहीं करती, बल्कि जीवन की वास्तविक परिस्थितियों, मानसिक संघर्षों तथा सामाजिक दबावों के संदर्भ में करती हैं।

बेघर, *दौड़* तथा *छुटकारा* जैसी रचनाओं में मध्यवर्गीय जीवन की आर्थिक असुरक्षाएँ, सामाजिक मान्यताएँ और संबंधों की जटिलताएँ अत्यंत स्वाभाविक रूप से उभरकर सामने आती हैं। अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि ममता कालिया के पात्र किसी विशेष वर्ग या विचारधारा के प्रतिनिधि नहीं, बल्कि बदलते भारतीय समाज के सामान्य नागरिक हैं। यही कारण है कि उनका कथा-साहित्य समकालीन सामाजिक यथार्थ की प्रामाणिक अभिव्यक्ति के रूप में स्थापित होता है। अध्ययन का एक महत्वपूर्ण निष्कर्ष यह है कि ममता कालिया आर्थिक आत्मनिर्भरता और पारिवारिक समन्वय को परस्पर विरोधी अवधारणाओं के रूप में नहीं देखती। उनके साहित्य में आर्थिक स्वावलंबन स्त्री को आत्मविश्वास, निर्णय क्षमता और सामाजिक सम्मान प्रदान करता है, किन्तु वे यह भी स्पष्ट करती हैं कि केवल आर्थिक स्वतंत्रता से स्त्री की सभी समस्याओं का समाधान संभव नहीं है। यदि पारिवारिक संबंधों में संवाद, सम्मान, समानता और भावनात्मक सहयोग का अभाव हो, तो आर्थिक आत्मनिर्भरता भी स्त्री के संपूर्ण व्यक्तित्व-विकास को सुनिश्चित नहीं कर सकती। *दौड़* तथा *एक पत्नी के नोट्स* के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि आधुनिक कार्यरत स्त्री को दोहरे उत्तरदायित्वों का निर्वहन करना पड़ता है। वह परिवार की आर्थिक संरचना को सुदृढ़ करने में योगदान देती है, साथ ही घरेलू एवं भावनात्मक दायित्वों का भी निर्वहन करती है। अध्ययन यह स्थापित करता है कि लेखिका पारिवारिक समन्वय को स्त्री के एकतरफा त्याग पर आधारित नहीं मानती, बल्कि साझा उत्तरदायित्व, संवाद, सहयोग और लैंगिक समानता पर आधारित संबंधों की समर्थक हैं।

संदर्भ सूची

प्राथमिक स्रोत

कालिया, ममता. (1990). *बेघर*. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।

कालिया, ममता. (1997). *एक पत्नी के नोट्स*. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।

कालिया, ममता. (2000). *दौड़*. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।

कालिया, ममता. (1986). *नरक दर नरक*. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।

- कालिया, ममता. (1984). *प्रतिदिन*. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
- कालिया, ममता. (1988). *सीट नम्बर छह*. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
- कालिया, ममता. (1983). *छुटकारा*. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
- कालिया, ममता. (1992). *मुखौटा*. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।

द्वितीयक स्रोत

- अग्रवाल, पद्मा. (2018). *समकालीन हिंदी कथा साहित्य और स्त्री विमर्श*. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।
- अग्निहोत्री, विमला. (2012). *हिंदी उपन्यास में नारी चेतना*. इलाहाबाद: साहित्य भवन।
- बोउवार, सिमोन द. (2011). *द सेकेंड सेक्स* (अंग्रेजी अनुवाद). नई दिल्ली: विंटेज बुक्स। (मूल प्रकाशन 1949)
- बटलर, जूडिथ. (1990). *जेंडर ट्रबल*. लंदन: रूटलेज।
- हुक्स, बेल. (2000). *फेमिनिज्म इज फ़ॉर एवरीबडी*. कैम्ब्रिज: साउथ एंड प्रेस।
- खेतान, प्रभा. (2003). *उपनिवेश में स्त्री*. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
- मैनेजर पांडेय. (2004). *साहित्य और समाज*. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।
- मैनेजर पांडेय. (2006). *साहित्य के समाजशास्त्र की भूमिका*. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।
- मिश्र, सरला. (2014). *समकालीन हिंदी कहानी और स्त्री-विमर्श*. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।
- मिलेट, केट. (1970). *सेक्सुअल पॉलिटिक्स*. न्यूयॉर्क: डबलडे।
- मोई, टोरिल. (2002). *सेक्सुअल/टेक्स्चुअल पॉलिटिक्स*. लंदन: रूटलेज।
- प्रसाद, गोपाल. (2015). *समकालीन हिंदी उपन्यास और स्त्री-विमर्श*. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
- शोवाल्टर, एलेन. (1977). *ए लिटरेचर ऑफ देयर ओन*. प्रिंसटन: प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस।
- सिंह, बच्चन. (2011). *हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास*. नई दिल्ली: राधाकृष्ण प्रकाशन।
- सिंह, नामवर. (1995). *कहानी : नई कहानी*. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन।
- सिंह, रेखा. (2010). *नारी अस्मिता और हिंदी साहित्य*. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन।
- टोंग, रोजमेरी. (2009). *फेमिनिस्ट थॉट* (तृतीय संस्करण). कोलोराडो: वेस्टव्यू प्रेस।
- त्यागी, सुष्मा. (2016). *हिंदी की समकालीन महिला कथाकार*. नई दिल्ली: किताबघर प्रकाशन।
- वूल्फ, वर्जीनिया. (2004). *ए रूम ऑफ वन'ज ओन*. लंदन: पेंगुइन बुक्स। (मूल प्रकाशन 1929)
- कुमार, अरुण. (2018). समकालीन हिंदी उपन्यासों में मध्यवर्गीय स्त्री का स्वरूप. *भारतीय सामाजिक अध्ययन पत्रिका*, 79(3), 341–356।
- चक्रवर्ती, रश्मि. (2014). समकालीन हिंदी कथा साहित्य में लैंगिक विमर्श. *इंडियन लिटरेचर*, 58(4), 102–116।
- वर्मा, रश्मि. (2020). समकालीन हिंदी कथा साहित्य में स्त्री की स्वायत्तता. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ हिंदी रिसर्च*, 6(2), 45–51।
- शर्मा, पूनम. (2021). समकालीन हिंदी कथा साहित्य का स्त्रीवादी अध्ययन. *जर्नल ऑफ जेंडर स्टडीज़*, 30(5), 596–608।
- श्रीवास्तव, मीनाक्षी. (2019). स्वतंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य में स्त्री, परिवार और अस्मिता. *लिटरेरी वॉइस*, 12, 55–67।

Cite the Article:

प्रीतिका. (2026). ममता कालिया के कथा साहित्य में स्त्री-स्वातंत्र्य और पारिवारिक उत्तरदायित्व का द्वंद्व: एक अध्ययन. *Shiksha Samvad International Open Access Peer-Reviewed & Refereed Journal of Multidisciplinary Research*, 4(1) 292-302, ISSN: 2584-0983 (Online), Volume 04, Issue 01, September-2026., DOI: - <https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v4i1.33>

Disclaimer/Publisher's Note: The views, findings, and opinions expressed in this publication are solely those of the author(s). The publisher and editorial team are not responsible for any errors, claims, or consequences arising from the use of the published content.